ओम् शान्ति

(गीता के भगवान को सिद्ध करने वाला ड्रामा जिसमें गीता के एक भी श्लोक का उपयोग नहीं किया गया है।)

# 'सत् वचन महाराज'

(चार दोस्त कालू, धीरू, सोमु और परेश प्रात:काल morning walk करते हुए आपस में बात करते हैं)

**सोमु-** मैंने सुना है कि गोमतीपुर में एक बहुत ही सिद्ध पुरूष महात्मा स्वामी पंचामृतानन्द जी महाराज रहते हैं। साल भर वे मौन तपस्या में ही रहते हैं। केवल गुरूपुर्णिमा के दिन ही वे अपने शिष्यों एवं उनके दर्शन करने के लिए आने वाले भक्तों को आशीर्वाद देते हुए केवल दो-चार शब्दों में ही अपना अमृत वचन सुनाते हैं।

**धीरू-** हाँ, सुना तो मैंने भी है। आजकल उनकी चर्चा बहुत है। खीरी नदी के किनारे ही तो उनका आश्रम है। गुरू पुर्णिमा के दिन बहुत भीड़ होती है वहाँ। दूर-दूर से लोग आते हैं उनके दर्शन करने एवं खास उनके अमृत वचन सुनने के लिए।

**कालू-** अरे! कल ही तो गुरू पुर्णिमा है। तो क्यों नहीं हम भी चलें उनके दर्शन करने!

**परेश -** हाँ हाँ जरूर चलेंगे। ऐसा मौका छोड़ना थोड़े ही चाहिए।

( इस समय स्टेज की लाईट बन्द होगी और जल्दी ही अगले दृश्य की तैयारी के लिए सभी कलाकार मंच पर अपना स्थान ग्रहण कर लेंगे )

(चारों दोस्त स्वामीजी के दर्शन के लिए पहुँचते हैं। भीड़ में भी वे चारों एकसाथ अपना स्थान ढूँढ़ कर दरी पर बैठ जाते हैं। लाउड स्पीकर पर भजन का गीत बज रहा होता है।)

**सोमु** - वो देखो, आश्रम आ गया।

**सोमु** - वहाँ पर जगह खाली दिखाई दे रही है। चलो वहीं पर बैठते हैं।

( थाड़ी देर में स्वामी पंचामृतानन्दजी महाराज का प्रवेश होता है।)

सभा में सभी श्रद्धालु एक साथ जयकारे लगाते हैं - बोलो गुरू महाराज की! जय।

(3 बार)

**स्वामीजी-** (कुछ समय तक आँखें बन्द कर 3 बार ओम् ध्वनी करते हुए ध्यान लगाने के बाद बोलते हैं।)

**'झूठी काया, झूठी माया, झूठा सब संसार'**

सभा में सभी भक्तजन एकसाथ - सत् वचन महाराज।

(स्वामीजी फिर से आँखें बन्द कर थोड़ी देर पुनः ओम् ध्वनी करते हुए ध्यान करते हैं और उठकर सभी भक्तों प्रति आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ करते हुए वापिस चले जाते हैं।)

भक्तजन सभा में भजन गाते हैं - 'झूठी काया झूठी माया,झूठा सब संसार है।.....

(यहाँ फिर स्टेज की लाईट बन्द होती है और सभी स्टेज खाली करते हैं और अगला दृश्य तैयार)

(चारों दोस्त स्टेज में प्रवेश करते हैं।)

**परेश –** झूठी काया, झूठी माया, झूठा सब संसार है। अगर गुरू महाराज जी के यह वचन वास्तव में सत्य ही है। तो इसका मतलब यह हुआ कि – हम सब झूठे हैं! और जब पूरा संसार ही झूठा है, तो क्या गुरू महाराज जी भी झूठे नहीं हुए? यह जो संसार जिसमें हम सब जी रहे हैं, क्या यह सब झूठा है!

**सोमु -** नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। गुरू महाराज जी को आप झूठा नहीं कह सकते। कितना सिद्ध पुरूष हैं वे। उन्होंने जो कुछ भी कहा वो सत्य ही है।

**परेश -** मैं उनको झूठा नहीं कह रहा हूँ। परन्तु उस सत्य वचन का भी कोई सत्य व उचित अर्थ, व्याख्या व स्पष्टिकरण तो अवश्य होगा न! आखिर क्या है इसका अर्थ! इस पर विचार करना भी तो जरूरी है न!

**धीरू -** सोमु। परेश ठीक ही तो कह रहा है। इसका अर्थ तो हमें अवश्य समझना ही होगा। नहीं तो हमारा यहाँ आना ही व्यर्थ हो जायेगा। चलो, किसी अन्य महात्मा से पूछते हैं।

(चारों आगे की ओर बढ़ते हैं।)

**कालू -** मुझे पता है। यहाँ और कोई भी ऐसा महात्मा है ही नहीं जो इसका सही अर्थ बता सके। इसलिए टाईम वेस्ट न करके चलते हैं शहर में। (सभी शहर की ओर चल पड़ते हैं। स्टेज से प्रस्थान)

(स्टेज की लाईट फिर बन्द होती है और आश्रम का बोर्ड लगा दिया जाता है। फिर स्टेज में प्रवेश करते हैं।)

**धीरू -** कहते हैं कि – जहाँ चाह है वहाँ राह है। तो जरूर हमें भी इसके लिए कोई राह अवश्य ही मिल जायेगी।

**सोमु -** वो देखो। इस बोर्ड में क्या लिखा है! प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। Spiritual Museum. प्रवेश नि:शुल्क!

**कालू -** प्रवेश नि:शुल्क है। पैसा नहीं लगेगा। चलो चलो। एकबार देख लेते हैं। हो सकता हैं यहाँ इसका सही उत्तर मिल जाए।

( स्टेज की लाईट थोड़ी देर के लिए बन्द होती है। सभी स्टेज से प्रस्थान करते हैं और स्टेज पर एक टीपोई और पाँच कुर्सि रखी होती है। एक स्टेण्ड पर त्रिमूर्ती, शिवबाबा, तीनलोक, सृष्टिचक्र, ब्रह्मा बाबा एवं श्रीकृष्ण का चित्र एक के ऊपर एक टंगा हो या

फिर टीपोई पर रखा हो जैसी सुविधा उपलब्ध हो। एक कुर्सि पर ब्रह्माकुमारी बहन बैठी होती है फिर दरवाजे की घंटी बजती है और बहन दरवाजा खोलती है।)

(चारों स्टेज में प्रवेश करते हैं एवं ब्रह्माकुमारी बहन को देखकर हाथ जोड़कर सभी नमस्कार करते हैं।)

चारों दोस्त - नमस्ते दीदीजी।

**ब्रह्माकुमारी -** ओम् शान्ति। परमात्मा के घर में आप सभी का स्वागत है। आईए, आप सभी को Spiritual Museum का दर्शन कराते हैं।

(सभी स्टेज से प्रस्थान करते हैं। यहाँ पर 'शान्ति की शक्ति से' गीत लगभग देड़ मिनट तक बजता है। उस दौरान ऐसा किया जा सकता है कि प्रदर्शनी के एक-एक चित्र एक-एक भाई या बहन दर्शकों के तरफ अपने आगे रख स्वयं को छुपाते हुए स्टेज के एक तरफ से जल्दी जल्दी प्रवेश करते जाए और स्टेज के दूसरी तरफ से प्रस्थान करते जाए। म्युजियम दर्शन कराने का यह एक प्रतीकात्मक दृश्य होगा। स्टेज पर कुर्सि आदि वैसे ही रखी रहेगी।)

(उसके बाद ब्रह्माकुमारी बहन एवं चारो दोस्त स्टेज में प्रवेश)

**ब्रह्माकुमारी** - आईए, बैठिए। Spiritual Museum आपलोगों को कैसा लगा?

**धीरू -** दीदीजी, आपने बहुत ही अच्छे ढंग से ज्ञान की व्याख्या की। हमें बहुत कुछ नई जानकारी मिली और अच्छा भी लगा। परन्तु मेरा एक प्रश्न है। क्या मैं पूछ सकता हूँ!

**ब्रह्माकुमारी -** हाँ हाँ, क्यों नहीं। अवश्य पूछ सकते हैं। यहाँ आपको सभी प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे।

**धीरू -** आपने बताया कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। जबकि सारी दुनिया तो यही मानती है कि परमात्मा सर्वव्यापी है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनी, महात्मा, भक्त सभी तो परमात्मा को सर्वव्यापी ही मानते हैं। तो क्या वे सब के सब झूठे हैं?

**ब्रह्माकुमारी -** परमात्मा की सर्वव्यापकता एक शुद्ध भावना अवश्य है। क्योंकि भक्तों की परमात्मा से प्रीत है, उनके प्रति श्रद्धा है। परन्तु विवेक का प्रयोग न करने के कारण वह तो मात्र एक अंधश्रद्धा ही हो जाता है न!

अब आप ही बताईए कि अगर परमात्मा सर्वव्यापी होगा तो भक्त परमात्मा से प्रीत कैसे जोड़ेंगे! मीरा ने कहा कि – 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।' अगर परमात्मा सर्वव्यापी होता तो सिर्फ कृष्ण ही क्यों, दूसरे सभी पापी, खूनी, बलात्कारी क्यों नहीं? क्या सर्वव्यापी से प्रीत जोड़ा जा सकता है? क्या दुनिया के कूड़े-कीचड़े, सर्प-बिच्छू आदि में आप परमात्मा की उपस्थिति एवं परमात्म प्रीत की अनुभूति कर सकते हैं? नहीं न! तो क्या इतने ऊँच ते ऊँच परमात्मा को गन्दगी में भी मौजूद मान लेना उनकी ग्लानी करना एवं उनका अपमान करना नहीं हुआ?

**सोमु–** जी दीदी। आपने ठीक कहा। हमने तो अभी तक अज्ञानता वश परमात्मा की बहुत ग्लानी की है। अब हम ऐसा कभी नहीं करेंगे।

**ब्रह्माकुमारी -** जरा सोचिए। जब तक आत्मा शरीर में मौजूद है, तब तक तो वह मनुष्य जिन्दा। परन्तु जब आत्मा शरीर से निकल गई तो उस समय शरीर को क्या कहेंगे?

**कालू -** मृत शरीर यानी मुर्दा। लाश।

**ब्रह्माकुमारी -** अब आप बताईए कि आत्मा तो शरीर से निकल गई परन्तु क्या सर्वव्यापी परमात्मा उस लाश में ही रह गया! तो फिर उस लाश रूपी परमात्मा को सन्मान

के साथ रखने के बजाए जला या गाड़ क्यों दिया जाता है? क्या यही परमात्मा से प्रीत निभाने की रीत है?

**कालू -** परन्तु दीदीजी हमने तो यही सुना है कि – आत्मा सो परमात्मा।

**ब्रह्माकुमारी -** भैया, अगर आत्मा ही परमात्मा है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि मृत्यु के समय शरीर से परमात्मा निकल गया। तो भी परमात्मा सर्वव्यापी कैसे हुआ? सर्वव्यापी माना इस सृष्टि के हर कण में। तो इस मान्यता से भी सर्वव्यापी परमात्मा कहीं से निकलेगा कैसे?

**परेश -** दीदीजी, आपने तो आज हमारी आँखें ही खोल दी। सारी दुनिया ने तो आज परमात्मा की सर्वव्यापकता की झूठ को ही मन में पाल रखा है।

**ब्रह्माकुमारी -** तभी तो कहा जाता है - 'झूठी काया, झूठी माया, झूठा सब संसार'। अर्थात् स्वयं को आत्मा के बजाए काया – माना शरीर मान लेना यह अज्ञान है, झूठा है। चारों ओर अज्ञान की माया है जिससे मनुष्य की बुद्धि मलीन और भ्रमित माना झूठी हो गई है। झूठा सब संसार – अर्थात् सारा संसार ही अब 'परमात्मा की सर्वव्यापकता' रूपी झूठी अज्ञानता में डूबा हुआ है। सर्वव्यापी परमात्मा नहीं बल्कि यह अज्ञान का झूठ ही तो आज सर्वव्यापी हो गया है।

**परेश -** ओहो! दीदी, इसी का ही तो अर्थ जानने के लिए हम सभी यहाँ आये हैं। आज इसका अर्थ आपने बिना पूछे ही बता दिया। हमलोग तो किसी सच्चे गुरू की तलाश में थे। अब तो आप ही हमारे सच्चे गुरू हैं।

**कालू -** दीदीजी। आज गुरू पुर्णिमा के दिन हम सभी आप को ही गुरू स्वीकार करते हैं।

**ब्रह्माकुमारी -** नहीं नहीं। गुरूओं का भी गुरू परम सदगुरू तो वो निराकार शिव परमात्मा ही है। जिन्होंने हमें भी इस झूठ अर्थात् अज्ञान अंधकार से निकाल कर सत्य ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर दिया है। वो निराकार ज्योतिर्बिन्दु शिव परमात्मा आप सबके भी परमपिता, परम शिक्षक एवं परम सतगुरू हैं। एक उनकी ही महिमा है - 'सत्यम – शिवम् – सुन्दरम्'।

**सोमु -** दीदीजी, मैं तो शुरू से ही भगवान शंकर भोलेनाथ जी का भक्त हूँ। मैं रोज उनकी पूजा करता हूँ। मैं तो यह मानता हूँ कि – एक वही महादेव शिव-शंकर भोलेनााथ जी ही परमात्मा हैं।

**ब्रह्माकुमारी -** निराकार परमपिता शिव परमात्मा कौन हैं, इस बात को भी और अच्छी तरह से समझने के लिए मैं आप सभी को यह तो अवश्य स्पष्ट करना चाहुंगी कि सतयुगी सृष्टि के रचईता निराकार परमात्मा 'शिव' एवं उनकी रचना 'शंकर' में कितना अंतर है।

**सोमु -** क्या! क्या कहा दीदीजी। क्या शिवजी और शंकर जी दोनों अलग-अलग हैं ? यह कैसे सम्भव है!

**ब्रह्माकुमारी -** ( त्रिमूर्ती के चित्र को दिखाकर समझाते हुए ) इस पुरानी कलियुगी दूनिया में जब चारों ओर झूठ और अज्ञान का अंधकार छाया रहता है, तब वह सत्य स्वरूप ज्ञान सूर्य निराकार ज्योतिर्बिन्दु शिव परामात्मा इस कलियुगी दुनिया को सतयुगी दुनिया के रूप में परिवर्तित करने के लिए सृष्टि पर अवतरित होते हैं। निराकार परमात्मा को अवतरित होने के लिए उनको साकार में प्रजापिता ब्रह्मा के तन का अधार लेना पड़ता है। वे उनके तन में परकाय प्रवेश करते हैं।

बीच में यह विष्णु का चित्र उस सतयुगी दुनिया का प्रतीक है। अर्थात् नर को श्रीनारायण एवं नारी को श्रीलक्ष्मी बना देना, यही परमात्मा के अवतरण का उद्देश्य है। Aim object है।

फिर यह शंकर का चित्र वास्तव में कलियुग को सतयुग में परिवर्तित करने की प्रक्रिया व विधि का प्रतीक है।

**परेश -** वो कैसे दीदीजी, इसे थोड़ा और स्पष्ट करें।

**ब्रह्माकुमारी -** 'शंकर' शब्द का अर्थ होता है – शंका-कुशंकाओं का निराकरण करना। शंकाओं का विनाश करना। अर्थात् मनुष्यों के मन-बुद्धि में जितने भी अयथार्थ ज्ञान भरा हुआ है, जिसके कारण ही उसे सत्य ज्ञान के प्रति शंका, भ्रम व doubts पैदा होते हैं, उसका नाश करना, समाप्त करना। तभी इस ईश्वरीय ज्ञान को स्पष्ट रूप से समझना सहज होता है। इसीलिए ही कहा जाता है कि - 'ज्ञानसूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश।' यह पहली विधि है।

**कालू -** अच्छा दीदी, फिर दूसरी विधि क्या है?

**ब्रह्माकुमारी -** परमात्मा का सत्य परिचय प्राप्त करने के बाद दूसरी विधि है – निश्चयबुद्धि होकर उस परमात्मा से अपना बुद्धियोग जोड़ने का अभ्यास करना। जिसे राजयोग कहा जाता है। इसी योग-तपस्या से ही आत्मा के अंदर अनेकानक दिव्य शक्तियों का विकास होता है। जिसके फलस्वरूप ही आत्मा अपनी स्वउन्नति के मार्ग पर आने वाले अनेकानेक विघ्नों का विनाश कर आगे बढ़ने में सक्षम होती है।

**परेश -** वाह्। ऐसा राजयोग तो हमें अवश्य ही सीखना है दीदी। क्या आप हमें सिखायेंगे!

**ब्रह्माकुमारी -** अवश्य। इसी सेवा के लिए ही तो हम उपस्थित हैं।

**सोमु -** तो उसके लिए क्या हमें सब घर-वार छोड़ना पड़ेगा?

**ब्रह्माकुमारी -** घरबार नहीं, बल्कि अयथार्थ व झूठी मान्यताएँ जो मन में घर कर गई है, उनको छोड़ना होगा एवं अहितकारी पुरानी चाल-चलन तथा जीवन शैली को परिवर्तन करना होगा। यही त्याग एवं तपस्या है। तपस्या में मग्न शंकर जी वास्तव में इसी तपस्या की विधि का ही तो प्रतीक है। इस प्रकार से जब हम आत्माएँ अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेती हैं, तब फिर इस पुरानी दुनिया का ही विनाश हो जाता है। और सब अशान्त आत्माएँ अपने शान्तिधाम में पहुँच जाती है। यह अंतिम विधि है।

**कालू -** क्या! ये दुनिया खत्म हो जायेगी? फिर हमारा क्या होगा दीदीजी?

**ब्रह्माकुमारी -** इसमें घरबराने की कोई बात नहीं भैया। परिवर्तन तो सृष्टि का अनादि नियम है। परन्तु अब जबकि दुनिया बिल्कुल तमोप्रधान बन चुकि है, तो इस महापरिवर्तन की विधि द्वारा ही फिर सतयुगी दुनिया का प्रारम्भ होगा। जहाँ पर केवल सुख ही सुख होगा। दु:ख का नामो-निशान भी नहीं होगा।

**सोमु -** ओहो! हमें तो उस सतयुगी दुनिया में जाना ही है। तो उसके लिए हमें क्या करना होगा दीदीजी?

**ब्रह्माकुमारी -** उसके लिए परमात्मा को यथार्थ रीति पहचान कर उनसे अपना सर्व सम्बन्ध जोड़ते हुए बहुत प्रेम से योगयुक्त होने का अभ्यास करना होगा। तभी उन्हीं से हमें सर्ब प्राप्तियाँ होगी।

**धीरू -** तो हमें परमात्मा का यथार्थ परिचय बताईए दीदीजी।

**परेश -** दीदीजी, जैसा कि आपने बताया कि – एक तो परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। दूसरा कि – परमात्मा के कर्तव्य का उद्देश्य है नर को विष्णुजी जैसा देवता बनाना। और इस कर्तव्य के लिए ब्रह्माजी के तन का आधार परमात्मा लेते हैं, एवं शंकरजी इस

कर्तव्य की विधि है। अर्थात् ये तीनों भी परमात्मा नहीं है। बल्कि उनके कर्तव्य के उद्देश्य, आधार एवं विधि है। यह तो समझ में आ गया। परन्तु वो परमात्मा वास्तव में कौन है जिनसे हमें सबकुछ प्राप्त होगा?

**ब्रह्माकुमारी -** आपने बिल्कुल ठीक समझा भैया। अब मैं आपको उस परमात्मा का यथार्थ परिचय बताती हूँ। आप सभी ध्यान से सुनना और समझना। ( शिवबाबा एवं तीनलोक के चित्र को सामने रखते हुए।)

पहली बात कि – परमात्मा अर्थात् परम + आत्मा। परम माना सबसे ऊँच, सर्वोच्च। ज्ञान, गुण एवं शक्ति आदि सबमें ऊँचा है। इसीलिए उन्हें सर्वज्ञ, सर्व गुणों का सागर एवं सर्वशक्तिवान कहा जाता है। हैं तो वह भी आत्मा परन्तु उनसे ऊँचा कोई भी नहीं है। क्योंकि वह कोई देहधारी नहीं हैं। वह हम मनुष्यों जैसे माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते हैं। बल्कि ब्रह्मा के तन में परकाया प्रवेश कर स्वयं प्रकट होने वाले स्वयंभू है। वह अजन्मा, अभोक्ता एवं अकर्ता हैं। इससे यह स्पष्ट है कि कोई भी शरीरधारी मनुष्य परमात्मा नहीं हो सकता है।

दूसरी बात कि – वह एक point of divine light है। जड़ ज्योति नहीं बल्कि एक चैतन्य दिव्य ज्योति स्वरूप एवं बिन्दु रूप है। वह अति सूक्ष्मातिसूक्ष्म एक ज्योति कण है। उन्हीं का ही दिव्य नाम 'शिव' है। 'शिव' शब्द का तीन अर्थ है – कल्याणकारी, बिन्दु एवं बीज। वह मनुष्य सृष्टि रूपी वंश वृक्ष का बीज रूप है, जो इस पाँच तत्वों की दुनिया से पार परमधाम के निवासी हैं। वहाँ से उनका अवतरण कलियुग के अंत में इस पतित सृष्टि को पावन सतयुगी दुनिया में परिवर्तन करने के लिए ही होता है। बिन्दु की कोई लम्बाई चौड़ाई वाली आकृति नहीं होती। इसलिए ही उन्हें निराकार कहा जाता है। जबकि शरीर को साकार कहा जाता है। तो निराकार परमात्मा साकार ब्रह्मा के तन में परकाया प्रवेश कर उनके मुख द्वारा हमें सत्य ज्ञान सुनाते हैं।

तीसरी बात है कि – उस एक निराकार परमात्मा से ही सर्व सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है। जबकि किसी मनुष्यात्मा से नहीं। इसीलिए ही भक्ति करते हुए मनुष्य यह कहते हैं कि - 'त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव सर्वम् मम देवो देव'। वह हम सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता, परम शिक्षक एवं परम सतगुरू हैं, जिनका कोई पिता शिक्षक एवं गुरू नहीं है। परमात्मा के इस महिमा को जानकर उनसे सर्वसम्बन्ध जोड़ते हुए प्रेम से निरन्तर उनकी याद में रहने का अभ्यास करना ही राजयोग है। और इसी राजयोग के द्वारा ही आत्मा पतित से पावन बन जाती है।

यही तीन बातें समझ लेना ही परमात्मा का यथार्थ परिचय है।

**परेश -** आज हमें परमात्मा का सत्य परिचय प्राप्त हुआ। आपका हृदय से धन्यवाद दीदीजी।

**धीरू -** हम सभी आपके सदा आभारी रहेंगे दीदीजी। मैंने श्रीमद्भगवत् गीता का कई बार अध्ययन किया। परन्तु इतना स्पष्ट, सटीक और संक्षिप्त व्याख्या आज ही समझ में आया। आपने जैसे कि थोड़े शब्दों में ही पूरी गीता का सार बता दिया। परन्तु दीदीजी, मेरा एक प्रश्न है कि गीता में तो श्रीकृष्ण को ही भगवान कहा गया है। उसमें शिव जी के नाम का वर्णन तो कहीं भी नहीं है।

( आवश्यकता अनुसार दिखाकर समझाने के लिए शिवबाबा एवं श्रीकृष्ण का चित्र को सामने रखते हुए।)

**ब्रह्माकुमारी -** आपने बिल्कुल ठीक कहा भैया। 'श्रीमत् भगवत् गीता' को ही सर्व शास्त्रमयी शीरोमणि कहा जाता है। क्योंकि एक गीता में ही direct 'भगवानुवाच' शब्द लिखा हुआ है। परन्तु वास्तव में जो 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' अजन्मा, निराकार ज्योतिर्बिन्दु शिव परमात्मा हैं, उनके बदले माता के गर्भ से जन्म लेने वाले साकार

देहधारी श्रीकृष्ण का नाम लिख दिया गया है, जिनका जन्मदिन हम सभी जन्माष्टमी के रूप में मनाया करते हैं। जबकि आप सबने यह तो समझ ही लिया है कि – कोई भी देहधारी को परमात्मा तो कहा नहीं जा सकता है।

**सोमु -** परन्तु दीदीजी, इतनी बड़ी भूल! आखिर ऐसा कैसे हो गया?

**ब्रह्माकुमारी -** इसके रहस्य को भी समझना अति आवश्यक है। (सृष्टि चक्र का चित्र को हाथ में उठाते हुए) इस सृष्टि मंच पर यह अविनाशी नाटक का खेल एक चक्र के रूप में फिरता ही रहता है। जो कि हर 5000 साल के बाद हूबहू रिपीट होता रहता है। इसे कल्प का चक्र कहा जाता है। इसमें का आधा कल्प सतयुग और त्रेतायुग को सुखसम्पन्नमय स्वर्ग कहा जाता है। और बाकि का आधा कल्प द्वापर और कलियुग को नर्क कहा जाता है। अब कलियुग एवं सतयुग के बीच में एक छोटा सा युग व समय दिखाया गया है जिसे कल्याणकारी पुरूषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। पूरे कल्प में इसी अंत के समय पर ही स्वयं परमात्मा सृष्टि पर अवतरित होते हैं। अब यही समय चल रहा है। निराकार ज्योतिर्बिन्दु शिव परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के तन में परकाय प्रवेश करके अब ज्ञान मुरली सुना रहे हैं। और वास्तव में यही डायरेक्ट भगवानुवाच की ज्ञान मुरली ही तो सच्ची गीता है जो स्वयं भगवान अभी सुना रहे हैं। (ब्रह्मा बाबा का चित्र दिखाते हुए।)

**परेश -** दीदीजी, क्या हम वो ज्ञान मुरली सुन सकते हैं?

**ब्रह्माकुमारी -** अवश्य। जरूर सुन सकते हैं।

**कालू -** दीदीजी, फिर वो गीता और इस गीता में क्या अंतर है? वो महाभारत वाली गीता को तो सभी जानते हैं। परन्तु अभी की भगवानुवाच वाली गीता को कोई क्यों नहीं जानता है?

**ब्रह्माकुमारी -** अभी स्वयं परमात्मा जो गीता ज्ञान सुना रहे हैं, इसे आप जैसे समय देकर रूचि से समझने की जिज्ञासा रखने वाली कोटो में कोऊ आत्मा ही जान पाती है। परमात्मा की ज्ञान-मुरली ही सच्ची गीता है। जो विश्व की सभी आत्माओं के लिए है, चाहे वो कोई भी देश, धर्म, जाति के हों, बाल, युवा, वृद्ध हो, पढ़े वा अनपढ़े ही क्यों न हो। इसीलिए परमात्मा की ज्ञान-मुरली गीता बहुत ही सरल हिन्दी भाषा के शब्दों में ही होते हैं, जिससे सभी समझ सके। परमात्मा ने कभी भी संस्कृत भाषा में ज्ञान-मुरली गीता, श्लोकों के छन्द बनाकर नहीं सुनाते हैं। वो तो फिर सबको समझना ही कठीन हो जाएगा।

**धीरू -** दीदीजी, आपने कहा कि परमात्मा अभी सरल हिन्दी भाषा में गीता ज्ञान सुना रहे हैं। परन्तु वो संस्कृत के श्लोकों वाली गीता तो सदियों पहले से ही चली आ रही है। इन दोनों गीता का क्या कोई आपसी सम्बन्ध भी है?

**ब्रह्माकुमारी -** जैसे कि पहले ही आप सभी को मैं बता चुकि हूँ कि - यह 5000 वर्ष का अविनाशी ड्रामा का खेल हर कल्प हूबहू रिपीट होता रहता है। उसी अनुसार परमात्मा जो अभी यह गीता ज्ञान-मुरली सुना रहे हैं, वो 5000 वर्ष पहले भी हूबहू ऐसा ही सुनाया था। जिसके फलस्वरूप ही नये कल्प का प्रारम्भ नई सतयुगी दुनिया से हुआ। पतित दुनिया पावन बन गई। परमात्मा के इतने श्रेष्ठ महानतम् कर्तव्य की गौरव गाथा को फिर द्वापर युग के भी अंत में लिखा गया। अर्थात् उस घटनाक्रम को लगभग 3500 वर्ष बाद लिखा गया। क्योंकि सतयुग एवं त्रेतायुग रूपी स्वर्ग के सुख में कोई परमात्मा को याद ही नहीं करते हैं।

**सोमु -** ओहो! तभी तो कहा जाता है कि – दु:ख में सिमरण सब करे, सुख में करे न कोई।

**ब्रह्माकुमारी -** जी। द्वापरयुग के अंत में जब थोड़ा दुःख शुरू होता है, तब सुख के सागर परमात्मा की उस गौरव गाथा की ओझल स्मृति के आधार पर ही वही पीछले कल्प के संगमयुग का भगवानुवाच सत्य गीता का यादगार शास्त्र 'श्रीमत भगवत् गीता' की रचना की गई। परन्तु वो रचना संस्कृत के श्लोकों के रूप में किया गया। इतने वर्षों बाद उस वास्वविक घटना का वर्णन करने में उसमें अनेकानेक मनुष्य मतों का mix होना तो स्वाभाविक ही है।

**धीरू -** जी दीदीजी। अभी समझ में आया कि श्लोक वाली गीता में भूल होने का कारण क्या है और इन दोनों गीता का आपस में क्या सम्बन्ध है।

**परेश -** आहो! दीदीजी, आपने तो यह ज्ञान का प्रकाश देकर, अज्ञान का पर्दा हमारे सामने से हटा दिया। मुझे तो लगता है कि शायद यह गीता ज्ञान मुरली के इस मुरली शब्द को लेकर ही इस महान घटनाक्रम को श्रीकृष्ण के साथ जोड़ दिया गया है। जिसके कारण ही निराकार शिव परमात्मा के बदले साकार देहधारी श्रीकृष्ण को ही भगवान समझने की भूल हुई होगी!

( शिवबाबा, श्रीकृष्ण एवं ब्रह्माबाबा के चित्रों को आवश्यकतानुसार दिखाते हुए।)

**ब्रह्माकुमारी -** आपने ठीक ही कहा भैया। मुरली मनोहर श्रीकृष्ण कन्हैया की महिमा अलग है और निराकार ज्योतिर्बिन्दु शिव परमात्मा की महिमा अलग है। 16 कला सम्पूर्ण, प्रथम देवात्मा श्रीकृष्ण तो सतयुग का प्रथम विश्व महाराजकुमार है। जबकि निराकार ज्योतिर्बिन्दु शिव तो परमात्मा हैं। सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। श्रीकृष्ण की आत्मा ही पूरे कल्प में 84 जन्मों का चक्कर लगाकर अंतिम जन्म में प्रजापिता ब्रह्मा बनते हैं। जिनके तन में ही निराकार परमपिता शिव परमात्मा परकाया प्रवेश करके उनके मुख द्वारा ही यह गीता ज्ञान मुरली सुनाते हैं। और इसी ज्ञान मुरली को जीवन में सम्पूर्ण रूप से धारण करने के फलस्वरूप प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ही अगले

जन्म में फिर सतयुग का प्रथम देवात्मा, प्रथम विश्व महाराजकुमार श्रीकृष्ण का पद पाते हैं।

**कालू -** यह तो और ही एक अद्भुत गुह्य राज़ आपने सुना दिया दीदीजी।

**ब्रह्माकुमारी -** एक निराकार परमात्मा ही सर्वज्ञ हैं। आत्माओं के पुनर्जन्मों की कहानी तो केवल वही बता सकते हैं। यह सब गुह्य रहस्य तो उन्होंने ही हमें सुनाया है।

**धीरू -** मूल बात अब यह समझ में आया कि निराकार शिव परमात्मा की वाणी – जो ब्रह्माजी के मुख से भगवानुवाच - ज्ञान मुरली है, वही सच्ची गीता है। और श्लोकों वाली गीता शास्त्र तो इसी सच्ची गीता का ही यादगार ग्रन्थ मात्र है, जो वास्तव में शिव भगवानुवाच नहीं है।

**ब्रह्माकुमारी -** जी भैया। क्योंकि भगवान ने तो संस्कृत के श्लोक सुनाया ही नहीं। और वैसे भी 'गीता' शब्द का वास्तविक अर्थ है - मानव जीवन को हीरे तुल्य बनाने के लिए 'ईश्वरीय ज्ञान' अर्थात् ईश्वर द्वारा सुनाया गया ज्ञान की उपयोगीता। इस उपयोगीता शब्द से ही तो 'गीता' शब्द निकला है। पतित कलियुगी दुनिया को पावन सतयुगी दुनिया में परिवर्तन करने का महानतम् कर्तव्य निराकार शिव परमात्मा ने सत्य ज्ञान सुनाकर ही तो किया। जिसका ही गायन व चर्चा युगों तक सर्वत्र होता आया है। वही गायन व चर्चा श्लोकों वाली गीता के रूप में तब तक चलता रहता है, जब तक कि निराकार शिव परमात्मा फिर से प्रैक्टिकल में सच्ची गीता न सुनावे और सर्व मनुष्यात्माओं को इस सत्यता का पता न चले।

**परेश -** जी दीदीजी, सभी को इस सत्यता का पता अवश्य चलना ही चाहिए। आज से हम चारों दोस्त इसका प्रचार अवश्य करेंगे। आपके नेतृत्व में जन-जन तक परमात्मा का यह सत् वचन, ज्ञान मुरली, सच्ची गीता एवं गीता के भगवान के आगमन का सन्देश अवश्य पहुँचायेंगे।

**ब्रह्माकुमारी -** हमारा नारा भी यही है कि –

'सर्व सत्यों में सत्य महान।

शिव है गीता के भगवान।'

**ब्रह्माकुमारी -** सर्व सत्यों में सत्य महान।

**चारों दोस्त एकसाथ -** शिव है गीता के भगवान।

( यह नारा टर्न बाई टर्न 3 बार रिपीट करेंगे।)

( उसके बाद डॉ॰ दामिनी का गीत 'निराकार शिव है आए, ब्रह्मा तन में आए...।)

( गीत बजते समय ब्रह्माकुमारी बहन एवं चारों दोस्त के अलावा और भी कुछ भाई-बहने सफेद वस्त्रों में सम्मिलित होकर कोई बाबा का झण्डा, कोई शिवबाबा का चित्र, कोई ब्रह्माबाबा का चित्र एवं कोई क्लास में सुनाई जाने वाली मुरली लेकर डान्स करेंगे और गीत के शब्दों अनुसार सम्बन्धित चित्र पकड़कर रखने वाले भाई या बहन सामने आयेंगे और ब्रह्माकुमारी बहन उस चित्र के तरफ ईशारा करेंगी।)

-0 ओम् शान्ति 0-

नोट :- स्टेज में दो पर्दे की आवश्यकता होगी। एक तो सामने का मैन पर्दा। दूसरा स्टेज की जो गहराई अर्थात् चौड़ाई होगी, उसके बीच में एक और पर्दा हो तो अच्छा होगा। ऐसी व्यवस्था कर लिया जाए तो अच्छा होगा। क्योंकि बीच का पर्दा लगा रहेगा तो अगले सीन की तैयारी उस पर्दे के पीछे से करना सहज हो जायेगा। जिससे लाईट बन्द होते ही वो पर्दा खोल दिया जाएगा और तुरन्त अगला दृश्य शुरू हो जायेगा।